

अकबर

पहला भाग

महाकवि

अकबर इलाहाबादी



ले

अकबर

पहला भाग

महाकवि

अकबर इलाहाबादी

मुख्य मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द—महाकवि अकबर को पसंद करने वालों की तादाद बहुत अधिक है। वह हमारी तफरीह ही नहीं करते बल्कि मज़ाक ही में बड़े गहरे सबक़ सिखा देते हैं।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया— अकबर की आवाज खालिस देश भक्ति और कौम परस्ती की आवाज़ थी जिसकी बुनियाद मुल्क की तहज़ीबी रवायात थीं और जो उस शायरे आज़म के 'सुलहे-कुल' के नज़रिये की दलील थी....उन्हें किसी खास मजहब या जबान की हदों के अन्दर नहीं रक्खा जा सकता। बिलाशक वह उर्दू के बड़े शायर थे लेकिन आने वाली पीढ़ियों के लिए वह क़ौमी रवायात के हासिल थे। मैं इस मौके पर उस अज़ीम शायर को अपनी अक़ीदत पेश करता हूँ।

श्री विद्या भास्कर भू० पू० सम्पादक 'अमृत पत्रिका' प्रयाग—अकबर साहब का नाम उन लोगों में है जिन पर हिन्दी-उर्दू दोनों के प्रेमियों को गर्व है। उनकी उर्दू बड़ी सरल थी और उनकी रचनायें नागरी लिपि में लिखी जाने पर राष्ट्र भाषा की एक अनमोल सम्पदा सिद्ध होती है। अकबर का काल गाँधी युग का प्रारम्भिक काल था और इस बेजोड़ शायर ने उस काल का जैसा परिचय दिया और चित्रण किया है, वैसा हिन्दी के शायद ही किसी कवि से बन पड़ा है। अकबर उस जमाने के कवि थे जिसमें पृथक राष्ट्रवादिता की कल्पना भी कोई नहीं कर सका था। उनकी रचनाओं में जो व्यंग, कटूक्ति और आह्लादकारी विनोद है, वह उस उर्दू ही नहीं, भारतीय साहित्य की थाती बन चुकी है। हिन्दी के अनेक कवि उनकी शैली का अनुकरण करने पर भी असफल सिद्ध हो चुके हैं। ऐसे भारतीय कवि पर सारे भारत को गर्व है। इस गर्व को बनाये रखना चाहिए। इसका उपाय यही है कि उस कवि को राष्ट्र कवि मानकर हम उसका सम्मान करें।

अकबर सर्वस्व

या

कुल्लियाते अकबर

(पहला भाग)

रचयिता

महाकवि अकबर इलाहाबादी

प्रकाशक

अकबर मेमोरियल कमेटी

१ पोनप्पा रोड

इलाहाबाद

१९६४ { मूल्य दस रुपये मात्र

दो शब्द

लस्सानुलअस्त्र या सामयिक कविता के आचार्य महाकवि अकबर इलाहाबादी उर्दू काव्य जगत में अपना एक निराला स्थान रखते हैं। हास्य तथा व्यंग के वह बादशाह थे। सबसे बड़ी बात उनमें यह थी कि वह एक सच्चे देश भक्त तथा राष्ट्रीयता से श्रोत प्रोत थे। अंग्रेजियत से उन्हे सख्त नफ़रत थी और अपने हास्य मिश्रित व्यंगोक्तियों द्वारा उन्होंने देशवासियों में बढ़ती हुई पश्चिमीयता की बाढ को रोकने में बहुत काम किया।

अकबर मेमोरियल कमेटी प्रयाग ने उनका एक स्मारक प्रयाग में बनाने का निर्णय किया; साथ ही यह भी निश्चय किया कि उनकी तमाम प्रकाशित अप्रकाशित पुस्तकों को देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करके प्रचारित किया जाय। कुल्लियाते अकबर का पहला हिस्सा अकबर-सर्वस्व प्रथम भाग के रूप में पाठको के सामने है। यह महाकवि की रचनाओं का प्रथम संग्रह था। अकबर-सर्वस्व चार भागों में है। अन्य भाग भी प्रकाशित हो रहे हैं। हमरा विश्वास है कि हिन्दी जनता महाकवि की कृतियों का हार्दिक स्वागत करेगी।

१ पोनप्पा रोड
प्रयाग
२२-६-६२

पद्मकान्त मालवीय
मन्त्री
अकबर मेमोरिअल कमेटी

दो शब्द

लस्सानुलअस्त्र या सामयिक कविता के आचार्य महाकवि अकबर इलाहाबादी उर्दू काव्य जगत में अपना एक निराला स्थान रखते हैं। हास्य तथा व्यंग के वह बादशाह थे। सबसे बड़ी बात उनमें यह थी कि वह एक सच्चे देश भक्त तथा राष्ट्रीयता से ओत प्रोत थे। अंग्रेज़ियत से उन्हें सख्त नफ़रत थी और अपने हास्य मिश्रित व्यंगोक्तियो द्वारा उन्होंने देशवासियों में बढ़ती हुई पश्चिमीयता की बाढ़ को रोकने में बहुत काम किया।

अकबर मेमोरियल कमेटी प्रयाग ने उनका एक स्मारक प्रयाग में बनाने का निर्णय किया; साथ ही यह भी निश्चय किया कि उनकी तमाम प्रकाशित अप्रकाशित पुस्तकों को देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करके प्रचारित किया जाय। कुल्लियाते अकबर का पहला हिस्सा अकबर-सर्वस्व प्रथम भाग के रूप में पाठकों के सामने है। यह महाकवि की रचनाओं का प्रथम संग्रह था। अकबर-सर्वस्व चार भागों में है। अन्य भाग भी प्रकाशित हो रहे हैं। हमरा विश्वास है कि हिन्दी जनता महाकवि की कृतियों का हार्दिक स्वागत करेगी।

१ पोनप्पा रोड
प्रयाग
२२-६-६२

पद्मकान्त मालवीय
मन्त्री
अकबर मेमोरिअल कमेटी

मुद्रक
गणेश प्रिंटिंग प्रेस
८५५, सत्ती चौरा, अहियापुर
इलाहाबाद

अकबर-सर्वस्व

(पहला भाग)

कहो करेगा हिफ़ाज़त मेरी खुदा मेरा।
रहूँ जो हक़[1] पे, मुखालिफ़[2] करेंगे क्या मेरा ?
खुदा के दर[3] से अगर मैं नहीं हूँ बेगाना[4]।
तो जर्रा जर्र्ये-आलम[5] है आश्ना[6] मेरा ॥
मेरी हक़ीक़ते-हस्ती[7] यह मुश्ते-खाक[8] नहीं।
बजा है मुझ से जो पूछे कोई पता मेरा ॥
उन्हें है अक़्ल जो मुहताजे-गैर हैं हर दम।
मुझे है इश्क़ कि जो खुद है मुद्दुआ[9] मेरा ॥
गुरूर उन्हें है तो मुझ को भी नाज़[10] है अकबर।
सिवा खुदा के सब उनका है और खुदा मेरा ॥

२

दिल मेरा जिस से बहलता कोई ऐसा न मिला।
बुत[11] के बन्दे मिले अल्लाह का बन्दा न मिला॥
बज़्मे[12]-याराँ[13] से फिरी बादे[14]-बहारी मायूस।
एक सर भी उसे आमादये[15]-सौदा[16] न मिला॥
गुल[17] के ख्वाहाँ[18] तो नजर आये बहुत इत्र फ़रोश[19]।
तालिबे[20]-जम्ज़मए[21]-बुलबुले शैदा न मिला ॥
वाह क्या राह दिखाई है हमें मुरशिद[22] ने।
कर दिया काबे को गुम और कलीसा[23] न मिला॥
सैयद[?] चेहरे का तो कालेज ने भी रक्खा क़ायम।
रंगे-बातिन[24] में मगर बाप से बेटा न मिला ॥

---

(१) सच्चाई (२) दुश्मन (३) दरवाजा (४) अपरिचित (५) दुनिया (६) जानने वाला (७) जिन्दगी (८) मुट्ठी भर ख़ाक (९) मतलब (१०) घमँड (११) मूर्ति (१२) महफ़िल (१३) दोस्त (१४) हवा (१५) तैयार (१६) पागलपन (१७) फूल (१८) चाहने वाले (१९) इतर बेचने वाले (२०) चाहने वाले (२१) गाना (२२) गुरू (२३) गिरजा (२४) दिल।

सैयद उट्ठे जो गज़ट ले के तो लाखों आये।
शेख़[१] क़ुरआन दिखाते फिरे पैसा न मिला ॥
होशियारों में तो एक एक से सिवा हैं अकबर।
मुझ को दीवानोंमें लेकिन कोई तुझ सा न मिला ॥

३

एनायत[२] तख़्लिये[३] में बज़्म में ना-आशना[४] होना।
ग़ज़ब हैं यह अदाएँ दम ही भर में क्या से क्या होना ?
बुतों के पहले बन्दे थे मिसों के अब हुए ख़ादिम[५]।
हमें हर अह्द[६] में मुश्किल रहा है बाख़ुदा होना ॥
मेरा मोहताज[७] होना तो मेरी हालत से ज़ाहिर है।
मगर हाँ देखना है आपका हाजतरवा[८] होना ॥
जो दिक़्क़त[९] है वह यह है दिल नहीं है मेरे कहने में।
मुझे तस्लीम है इरशाद वाएज़[१०] का बजा[११] होना ॥
ख़ुदा बनता था मंसूर इसलिये मुश्किल यह पेश आई।
न खिंचता दार[१२] पर साबित अगर करता ख़ुदा होना ॥
बचाता है हज़ारों कुफ़्र[१३] से ऐ वाएज़े नादाँ[१४]।
बलाए दाम[१५] गेसूए[१६] बुताँ में मुब्तिला होना ॥
मुझे जोशे तबीअत से हुआ शौक़े गुनाह आख़िर।
अजब क्या नाज़ सिखलाए अगर उनको ख़फ़ा होना ॥
सिफ़ाते[१७] हक़-तआला[१८] ज़ेह्ने[१९] मुन्किर[२०] में नहीं आते।
वह कहता है कि गोया कुछ न होना है ख़ुदा होना ॥
ख़ुदा उनसे मिलाए तो नेहायत ख़ुश ही आयेगा।
नया अहदे वफ़ा बंधना गुज़िश्ता[२१] का गिला[२२] होना ॥
तरीक़े मग़्रिबी[२३] की क्या यही रौशन-ज़मीरी[२४] है ?
ख़ुदा को भूल जाना और महवे मासिवा[२५] होना ॥

---

(१) मोलवी (२) मेहरबानी (३) तनहाई (४) ग़ैर (५) नौकर (६) ज़माना (७) ग़रीब, दुखी (८) दुख दूर करने वाला (९) मुश्किल, कठिनाई (१०) नसीहत करने वाला (११) ठीक (१२) फाँसी (१३) गुनाह, पाप (१४) मूर्ख (१५) जाल (१६) बाल (१७) गुण (१८) ईश्वर (१९) समझ (२०) ईश्वर के विरोधी (२१) गुज़रा हुआ (२२) शिकायत (२३) अंग्रेज़ी तरीक़े (२४) समझदारी (२५) दुनिया।